बापुरेड्डी - गद्य-काव्य

रचनाकार

जे० बापुरेड्डी

आई. ए. एस.

अनुवादक :

इ० नरसिमलू "विद्यारत्न"

एम. ए., बी. एड., 'साहित्यरत्न'

बापुरेड्डी - गद्य काव्य

रचनाकार :

जे० बापुरेड्डी

आई. ए. एस.

अनुवादक :

इ० नरसिमलू "विद्यारत्न"

एम. ए., बी. एड., 'साहित्यरत्न'

हिन्दी प्रचार समिति, जहीराबाद-५०२२२०

प्रकाशक :

प्रकाश कुमार विद्यालंकार
जहीराबाद,
जिला मेदक, आं. प्र.

मूल्य : पन्द्रह रुपये

मुद्रक :
दीपक आर्ट प्रिंटर्स, कोठी,
बैंक स्ट्रीट, हैदराबाद–500 001
फोन : 557342

श्रद्धेय

माता-पिता

को सादर

समर्पित

—बापू रेड्डी

प्रस्तावना

काव्य के अध्ययन की रुचि प्रायः सभी के हृदय में होती है। इस रुचि का मूल कारण उसके अध्ययन से मानसिक सुख की प्राप्ति है. किन्तु परमानन्द प्राप्ति के लिए काव्य के मर्म को समझना भी परमावश्यक है। मर्म जानने के लिए रस, अलंकार तथा छन्द का ज्ञान होना आजकल के अपने छात्र - छात्रा पाठकों को जरुरी है।

अतएव प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अन्य रुचियों के साथ-साथ काव्य की उपयोगिता बहुधा है, जैसे–साहित्य, संगीत एवं ललित कलाएँ आनन्द उत्पन्न करने वाली होती हैं। इनमें से काव्यानन्द सबसे श्रेष्ठ और स्वादिष्ट कहा गया है। कविता के प्रेमियों ने काव्यानन्द को अमृत से भी अधिक स्वादिष्ट और मधुर माना है। वास्तव में काव्य हर समय और हर जगह आनन्द बढ़ाने वाला ही हैं।

आनन्दप्रियता मनुष्य का स्वाभाविक धर्म है। जिन साधनों से उसे आनन्द मिला करता है, उसकी ओर उसका खिचाव सहज ही हुआ करता है। काव्य के पाठ और नाटकों के दर्शन की प्राप्ति बडा सरलता से होती है। यही कारण है कि अन्य शास्त्रों की अपेक्षा काव्य के अध्ययन में मनुष्य का मन अधिक - ज्यादा लगता है। इसी से सुख - दुःख से भरे हुए संसार के सभी दुःख भी कवि-प्रतिभा का चमत्कार पाकर सुखदायक बन जातें हैं। उससे आनन्द

की अनुभूति होती है। वस्तुतः इसी प्रकार का परमानन्द लाभ ही काव्य का मुख्य प्रयोजन भी है। कविता का यह आनन्द साधारण आनन्द नहीं, बल्कि ब्रह्मानन्द का सहोदर माना गया है। भर्तृहरि के कथनानुसार साहित्य और संगीत कलाओं से जो व्यक्ति रहित है, वह साक्षात् पशु के बराबर है। जब संसार में भौतिकवाद का इतना अधिक दौरा - दौर नहीं था, लोगों की आवश्यकताएँ और इच्छाएँ ज्ञान प्राप्त करने के लिए हुआ करती थी, उस समय के कवि केवल परमानन्द (मोक्ष) प्राप्त करने के लिए काव्य - रचना करते थे, तथापि जनसाधारण भी इसी निमित उनका श्रवण और पाठ किया करता था। यह पद्धति वेद - काल से लेकर पुराण-काल तक बराबर बनी रही। आगे चलकर महाकाव्य - काल में काव्य के अनेक प्रयोजन हुए, जिनमें आनन्द (लौकिक) यश, धन और शिक्षा प्रमुख हैं।

काव्यों के पाठ एवं श्रवण और नाटकों के देखने से हृदय में आह्लाद और अपूर्व आनन्द की सहज अनुभूति होती है।

उत्तम काव्य के रचयिता कवि को यश अपने आप ही प्राप्त हो जाता है। वह अपनी यशस्वी रचना के कारण यशः शरीर से अमर रहता है। व्यास, वाल्मीकि, कलिदास, सूरदास, तुलसीदास आदि कवि अपनी रचनाओं के कारण आज तक जन्म-मरण रहित यशः शरीर से जीवित हैं। यों तो कवियों का जो सम्मान राज-दरबारों में और जनसाधारण में हुआ करता था, वह उनकी कविता और प्रतिभा के चमत्कार का फल नहीं तो और क्या है? अब भी उसी परम्परा का चिह्न प्रजातंत्र में आंशिक रूप में ही सही विद्यमान है।

काव्य के अध्ययन से मनुष्य को शिक्षा भी मिलती है और जीवन यात्रा के लिए एक प्रकार का मार्ग - दर्शन मिलता है।

तुलसीदास के रामचरित मानस को पढने के बाद पाठकों को यही शिक्षा मिलती है कि राम के सदृश मनुष्य को आचरण करना चाहिए न कि रावण की तरह। वास्तव में कवि के कर्म - धर्म को काव्य कहते हैं, विश्व का सार साहित्य वाक्यमय है। रस पूर्ण वाक्य ही काव्य है। प्राचीन आचार्यों ने 'रसात्मक' वाक्य को काव्य माना है। अर्थात् यह कि रस काव्य की आत्मा है, जहां काव्य है वहीं रस भी है।

अतएव कहने का अन्तिम रूप में गरज यह है कि, जीवन में जो कुछ सत्य, सुन्दर एवं मंगलमय है, वही इस सिद्ध कवि आंध्रप्रदेश के प्रसिद्ध तेलुगु भाषा के जनप्रिय - जनकवि जय - जय जे. बापूरेड्डी के आराध्य हिन्दी जगत्त के महाकवि निराला बरबस स्मरण हो आते हैं। लोकप्रिय बापू कवि आधुनिक तेलुगु साहित्य के क्रांतिकारी व युग प्रर्वतक माने जाते हैं। इनका व्यक्तित्व और कृतित्व महान है, इनकी प्रतिभा का वरदान पाकर तेलुगु भाषा साहित्य गर्वोन्नत हो रहा है, इसका उदाहरण बापूरेड्डी द्वारा रचित काव्य १. चैतन्य रेखलू २. राकेट्टू रायभारमु ३. बापूरेड्डी गेयालू ४. बापूरेड्डी गद्य काव्यालू ५. बापूरेड्डी पद्य काव्यालू ६. बापूरेड्डी गेय नाटिकलू ७. अनंत सत्यालू ८. नादवेदालू ९. इनक्वेष्ट ऑफ हारमोनी इत्यादि पुस्तकों के अलावा प्रात: आकाशवाणी से इनके पद्यों का रसास्वादन द्वारा लिया जा सकता है। ऐसे तेलुगु भाषा साहित्य के क्रांतिकारी और निराले अदम्य व्यक्तित्व को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि 'वेधा विदधे नूनं महाभूत समाधिना।' इतना ही नहीं–बापूरेड्डी तेलुगु आधुनिक गद्य - काव्य के टैगोर हैं, इनके रस-केन्द्रित गीत कहीं हिन्दी में विद्यापति और जयदेव व राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के उद्याम शृंगार तक पहुँचते हैं तो कहीं वर्णन–प्रसन्न एवं सुसंयत भारतीय संस्कृति–आध्यात्म से ओत - प्रोत है। किसी भी विषय की चित्र की गतिशीलता और अनुबन्धों की गतिशीलता

हमारे जनप्रिय बापू के गद्य - काव्य को अपूर्व स्वास्थ्य प्रदान करती है। अब ऐसे तेलुगु भाषा के लोकप्रिय कवि बापूरेड्डी की तेलुगु में रचित व जनप्रिय गद्य - काव्यों का सग्रह का हिन्दी जगत के पाठकों के लिए अनुवाद - प्रसाद का सर्व प्रथम प्रयास है। आशा है; हमारे - अपने छात्र व अन्य परिचित व अपरिचित पाठकों को पसन्द आयेगा। इस सन्दर्भ में मैं अपने मेहमान के खनकते सिक्के, रुपया - पैसा व सोना - चांदी अथवा सम्मान आदि का इच्छुक नहीं हूँ, बल्कि वह . . . वाह एव आशीर्वाद व भविष्य में साहित्य रचना की पगडडी पर चलने के लिए मार्गदर्शन - सुझाव की भीख मांगता हूँ। मेरीं इच्छा है कि इच्छा न रहे।

अत: अब प्रथम मेरे प्रयास (बापूरेड्डी गद्य काव्य) इस पुस्तक का अनुवाद तेलुगु से हिन्दी में करने की अनुमति मेरे गुरु-तुल्य श्रीयुत जे. बापूरेड्डी द्वारा आशीर्वाद के रूप में देने पर उन्हें कोटिश: धन्यवाद ! तथापि इस पुस्तिका के मुद्रण के लिए मेरे साथी - सहयोगी मित्र - समूह अध्यापक इत्यादि की आर्थिक सहायता अभिनन्दनीय है।

'बापूरेड्डी गद्य काव्य' के प्रकाशक मेरे माता-पिता के समान सम्मानित व मेरे जीवन यात्रा के रक्षक व मार्गदर्शक श्री प्रकाश कुमार विद्यालंकार तथा दीपक मुद्रणालय के प्रबधक श्री हरिश्चन्द्र विद्यार्थी को साधुवाद।

५ सितम्बर १९८६, इ. नरसिमलू 'विद्यारत्न'

एकांत में वेदांत

जीव में है आत्मा
देव में है परमात्मा
जीने के समय तक
इस जगत में,
मृत्यु के बाद
परलोक में
रहने वाले मनुष्यों में

वासित आत्मा को ही
परमात्मा का
प्रतिरूप कहते हैं
नर ही
नारायण का
प्रतिरूप कहते हैं।

आत्मा है इसलिए
परमात्मा है
इहलोक है इसलिए
परलोक अवश्य होगा

जन्म है, जब
जन्म देने वाला
तो होना चाहिए
जन्म देने वाले को

जन्म लेने वाला कहता है कि
वह अपने आप जन्म लिया–

स्वयं जो जन्म न लेता
स्वर्ग सिधारेगा
स्वयं जन्म कर्ता का
मरण नहीं होगा
ऐसा चलता है वेदांत
बोध होता नहीं किसी को जीवितांत–

जन्मित हर प्राणी
एक दिन मृत्यु पायेगा
मृतक हर एक होगा
पुनः जन्म लेने वाला
जन्म–मरण पाने वाला
जीव मात्र ही होगा
जन्म–मरण न पाने वाला
भगवान – ही होगा–

मृतक और जन्म लेने वाला
जीव में–
अमर है सदा आत्मा
मरती नहीं इसलिए
आत्मा है अमर
परमात्मा है अमर
इसी कारण वश
आत्मा को ही परमात्मा कहते हैं–

आत्मा है अगोचर
इसलिए
परमात्मा है अगोचर

शरीरधारी जीवित व्यक्ति
गोचर होता है
निर्देह देव
अगोचर होता है—

देह विसर्जित आत्मा
कहां होती है ?
निर्देह परमात्मा में
लीन होती है ।—
परमात्मा का स्थान कहां है ?
सारे विश्व में
ऐसा कहता है वेदांत
कोई न देखा इसका आदि और अंत—

त्वचा के लोचन
देख न पाते ईश्वर को
इसलिए पाने केलिए कहते हैं
मर्म—चक्षुओं को—
मर्म—चक्षु किसे करते हैं ?
अपने मन के लोचन
फिर वे करते क्या हैं ?

अंतर लोचन
न देख पाने कें
नहीं कोई अन्य जगत कहीं
वे आत्मा को निखरती हैं
परमात्मा को भी देखती हैं—

यह अंतर चक्षु
कैसे आते ?
इस दुनिया से

परलोकों को कैसे आलोकित करते ?
योग शांति द्वारा शान्ति
योग द्वारा
सम्भव है,
तपस्या करने से
तपस्या को जीतने से
प्रकाशित होते हैं-

कबतक करें तपस्या ?
जीतना, कैसे इस तपस्या को ?
जीवन भर करना है तपस्या
नयनों को बंद करके
जीतना है तपस्या को-

आशाएँ सब मिट जाने पर
जब इच्छा नहीं हो देखने की
सब दिख पड़ते हैं
सब सुन पड़ते हैं
तब जो
दिखाई देता है

उसको हम अन्यों को दिखा नहीं सकते
जो सुनाई देता है
जिसको हम औरों को नहीं सुना सकते
यानि

ऐसा जो दिखाई देता है
और सुनाई देता है
साक्षात् निरूपित न कर पाते
आत्मा और परमात्मा को

साक्षी नहीं – इसलिए
बिना साक्षी के सच्चाई को
बिना साधन किए ही
मुक्ति नहीं
और है क्या वेदांत, बस
इतने में समाप्त हुआ मेरा एकांत–।

मनोभिराम

उस दिन के विभावरी वन में
झुँड - झुँड सा विकसित पुष्प
उस दिन के दुस्वप्न गहरायी में
झर-झर झरने पल्लवित हुई अश्रृजल–

आँसुओं के सिवा आधार हीन मुझे
अनंत शोकावृत हृदयतल को
निराधार भूत मुझे भयभीत किया
कहीं कुछ दर्शित
आशा ज्योति को काट खाये हैं–

मेरे नसों में उस दिन
सारा दुःख रक्त बनके प्रवाहित हुआ
मेरी बुद्धी को विचार रूपी सर्पगण
फुँ कारते हुए डसलिए हैं
अशृजल युक्त मेरे जीवन के गारों में
आशा और निशी को आलोकित किये हैं–

मेरी माता एक ओर से
मेरे पिता दूसरी छोर से
भाई-बहने हर एक ओर से
अश्रु गंगा हो आसीन हुवे

किनारा हीन मेरे दुःख सागर में
सीधा आ मिल गये हैं–
भू-गगनों ने चक्की के चक्र बनकर
मेरे दिल को द्रवीभूत किए है

ब्रह्मण्ड के किनारे
बन्धुगण हो घोषित किए
मेरे चहुओर, मुझ में
मेरे नीचे, और ऊपर
नरक बाधाएँ नाट्य किये हैं
मुझे बचा केवल एक मात्र
आत्माभिमान रूपी अंग वस्त्रों को
अचानक पकड खींचे हैं–

मुझमें निहित गर्व अंहकार
मुझसे किये गये सुकृत परोपकार
द्रौपती, सीता सा, विलाप किये हैं
सत्य के संरक्षक कोई होतो
स्वप्न सा स्वागत किये हैं–

अभी सुबह हुयी जैसा भासित हुआ
विकसित हुई प्रथम सूर्य रश्मियाँ
श्रीकृष्ण या श्रीराम ही
गोचर हुआ आये हैं लीला गान करने–

आँखे खोल देखने तक
गोचर हुआ एक करुणामय
कोदंड-किरीट नहीं सो रामचन्द्र ही
करोड़ों आँसू भेदित सोमराज–

आशा किरण मेरे आँखों में स्थापित
इस लोक से अंधेरों को दूसरी बार दूर करके
मुझमें नव जीवन के वीणानाद पल्लवित कर
मुझे इस लोक पर फिर से विश्वास दिलाया–

अभयदान

स्वप्न, सुगंध सुशोभित
कश्मीर देश है क्या !
ऐसी रमणी के अधरों पर
प्रकाशमान दरहास है क्या
तेरे नाम सुनते ही मुझमें
निर्मल तुषार-कोहरा बरसती है
तेरे रूप स्मरण करते ही मुझ में
निर्घोष कुसुमहार प्रज्वलित होती है–

दानवता गर्जनों को तुम
हिम्मत न हारना कह कर
संकुचित द्वेषाग्नियों को तुम
समिद न हो जाना कहे
मनुष्य – लोक पक्ष से
भारत माता के समक्ष में
बोल रहा हूँ–बार - बार–

निर्मल हिमालय जैसा
तेरे शांतिमय जीवन में
तुम्हारे शारद हिमकर-सा

स्वतंत्र सुधापात्र में
विनील दास्य विष डाले
विद्रोह के कराल कंठों को

शीतगिरी शिखरों-सा शीश उठा कर
टुकुड़ों-सा काटेंगे कहकर
भारत माता के समक्ष

प्रतिज्ञा लेकर कह रहे हैं–
मानवता पक्ष से
बार-बार कह रहा हूँ–

तेरे फूलों के हृदय गारों में
प्रस्फुटित हमारे स्नेह परिमल
विश्व मानव जीवन गलियों में

विशाल भाव विभक्त हुवे
साम्यवाद सह जीवन में
भारतीय–संस्कृति इतिहास में
शाश्वत कांति रेखाएँ हुवे–

राजाओं, साम्राज्यवादियों के
नियंतों के, रण हंतकों के
ना डरे स्वेच्छा मणि हो तुम

कोटि-कोटि भारतीय जनता को
गुच्छे बने, तुराई हुवे–

श्वेत कपोत सुन्दर वर्णों में
तेरे हिम विंदुओं के आंचलों में
जाति–धर्म वैशम्यों को छेदित
रक्त सिक्त न होने देंगे
मृदु मधुर किल-किल ध्वनि रागों में
तेरे अमन वनांगनाये
भयंकर शताघ्नों में कर्ण कठोर
घोषों से जाने नहीं देंगे हम–

तेरे जीवन मल्लिका वनों में छिपकर
डस जाने वाले शत्रु फणों को
शान्ति सयर दक्ष यज्ञ में
सजीव दहन करने हेतु
स्वतन्त्र भारती के समक्ष
प्रतिज्ञा करके कह रहा हूँ–

जी जी विष

कैसे जीने की चिन्ता
कभी को छोड़ दी मुझे
कैसे मरने की बाधा
और पीड़ित कर रही मुझे–
विगत जीवन के समर में,
मृत्यु अंतस्थल से
पार हो चला हूँ

लेकिन,
मृत्यु अन्वेषण पथ में
अदृश्य आशा के खंडहर खेतों में
छेद नहीं कर पा रहा हूँ ।—

चलो किसी तरह जियेंगे समझने पर
इस रेगिस्तान में वर्षा होगी क्या ?
साहस कर किसी तरह मरते क्या
मर कर तो कर सकते क्या ?
मैं मर जाना कह कर
किसी को है तब,
और जीना कह कर तो
किसे है – कहो न ?
रिश्वते लेने वाले देवताओं को
इस गरीब को
स्वर्गलोक
जाने देंगे कह कर
किसे विश्वास होगा ?

कल
मेरे जीवन में
मंदार पुष्प खिल सके
लेकिन
इस बार
जीना गलत
इसलिए
आज मरे तो
कल फिर जिये तो

बहुत अच्छा हुआ होता
फिर तो, किन्तु क्या लाभ ?

मृतकों का तो
जीवित लोगों से
'मेजॉरटी' अधिक है
मेजॉरटी में मिले तो
मेरी प्रत्येकता क्या रही
मेरा अस्तित्व क्या रहा
मेजारटी पक्ष तो
मैनारटी को
न जीने देकर
अपने में मिला लेने केलिए
देख रहे जैसे हैं,
ठोक करके—

"आत्म-हत्या महा पाप"
कहते हैं आर्य-गण
मरने केलिए सिद्ध होना
शासन का विरुद्ध है भी—

मरने केलिए तो
समय नहीं मिल रहा है
जीने के लिए तो
राह नहीं मिल रहा है—

मरना कैसे ? का प्रश्न तो
अरे ! "जीवो ना" कह रहा
जीना फिर कैसे का प्रश्न तो

न मर सकते क्या ? कह रहा–
आगे पीछे अगर सोचे तो
किधर भी समझ में न आ रहा ।–

रक्त में तो
सार कुछ भी नहीं लेकिन
प्रसार मान तो चालू है
रक्त प्रसार तो बन्द नहीं
जीने–मरने की गति
बहुत ही बाधा कर है
जीने–मरने की समस्या
मृत्यु पाने पर ही बोध होगा क्या ?

***

आधुनिकासुर

आधुनिक असुर
विख्यात बकासुर
कैसा रहता, कहाँ रहता
न बताने योग्य, कामरूप है वह–

पेंगणा–सा रह सके वह
आदमी को, बातों को, निडर
वृक्ष–सा रह सकेगा वह
बीच गली में रह सकेगा वह
बीच जंगल में रह सकेगा वह

भेष कोई धर सकेगा वह
कोई भाषा बोल सकेगा वह–

होती हैं आँखें सिर पर उसके
सीधा नहीं देख सकता वह
शरीर भर दाँत होते हैं उसे
अगर कोई अकेला मिले तो काट खाता है–
पादरस की भांति घूमता है वह
पाप रूपी कीचड़ धर कर
डालियों पर चढ़कर गाता वह
कोयल भेस धर कर वह–

स्वलाभ कुछ हो तो ही
स्वर न चढ़ाता तनिक भी श्रम न पाता
देश तो कहे उसे केवल मिट्टी ही
मनुष्य कहे उसे दीमक-सा, मच्छर-सा

उसकी बातें खांड सी मीठी
उसकी राह नाग सर्प का नखल मात्र ही
मित्रों को दूषित कर वह मस्ती में रहता
वह डालता गाँधीजी को भी टोपी–

संगीत से न झड़ने की इमली है वह
नाग स्वर को न मिलने वाला नाग सर्प है वह
हर बात पर वह कहता जी हुजूर, हां मात्र
करने के सब अधिकार पाने, और धन–

बात करता वह चुम्बन–सा
पीठ पर मारे तक
खेलता रहेगा वह अद्भुत–सा
गरदन पर डसने तक–

छाया-सा उसे पकड़ना मुश्किल
अग्नि–सा उसे सहन करना कठिन
यों तो वह हमें शिकार कर रहा स्पष्ट से
किस रूप से तुम उस पर विजय पाओगे
इच्छा तुम्हारी–

शुनक - एक काव्य वस्तु

सारा जग निद्रा - ग्रस्त है
निशि भयंकर हो निरीक्षण कर रही
निर्भय हो तेरा स्वर मात्र
निशाओं को भेदित - सुनायी दे रहा
नींद छोड़कर मेरा मन
तेरे लिए सोच रहा है
शुनक ! तेरे सीधा सादे जीवन पर
एक सुन्दर काव्य की
रचना करना चाहा–

घर–घर दिनभर घूमने पर भी
कोई घर वाली खाना न रखी
हड्डी – हड्डी कहकर ऊपर से
हकाल तो दिये हैं ना !

किसी के जीवन पर आशा न रखकर
किसी में किसी हाल जी रहे हो ना !

फिर भी इस गांव पर तुझे
इतना प्रेम किस लिए !
बिल्ली मात्र को मुट्ठी भर दान न देने वाले
बड़ों के बंगलों की तरफ
वृक्षों सा घूमें छायाओं को
दूषित कर देती क्यों ?
चींटी के स्वर मात्र से
"भौं" कहकर उठती क्यों हो ?

मस्त से तनखा खावे
पोलीस वाले
किसी खोमे में आँख मूंदकर
गाढ़ निद्रा में – खर्राटे मारते रहे
शहरों में साधारण सा
'सरखा' एँ होते हुए

नौकरी – चाकरी नहीं सो तुम
जीवन भर
सेवा करते देखकर
मनुष्य कहलाने वालों से भी
तुझको ही
एक नमस्कार करना, दिल चाह रहा–

पोलिस गार्ड
डेंजर घंटियां
कोई नहीं सो इस गांव में
अगर तुम्हीं नहीं तो
सही ! भी कितना भयंकर हुआ होता !

तुम !
कहाँ पर निवास कर रहे हो ?
तुम्हारे बच्चे और तुम
कैसे जीवन बिता रहे हो ?
हरि – हरि ! वह श्रीहरी को ही मालूम
धनांध मनुष्यों के है क्या पता ?
विश्वासी लोगों को धोखा देने
न्याय कहलाये इन दिनों में
अन्याय को
न्याय अर्पित कर रहे हो
अविश्वास को
विश्वास समर्पित कर रहे हो–

भयंकर मृगों को
चोर मृगों को
हो तुम उनके शत्रु
कृतघ्न – लोक को भी तुम
कृतज्ञ दिखावे
मित्र मात्र हो तुम–

तुझे देख कर
दुनियाँ सीख लेने का
सही बहुत कुछ है
मुझे तो, तुझे देख कर
विश्वास करो
अमित–बाधा और दुःख–दायक है ।–

पीने का सत्य

पीवट का मन है
दर्पण जैसा
जिसमें उसकी
अनुभूतियों को
विचारों को
स्पष्ट रूप से देख सकते हैं–

मन भर के पीने वालों से
कहला नहीं सकते असत्य को
सही पीवट के
निज रूप को छिपा नहीं सकते
उसी लिए
पीने का सत्य–अगोपनीय होता है–

पीता नहीं मनुष्य
उसका मन
अस्थिर–मनुष्य का मस्तिष्क नहीं
केवल उसका अहंभाव
मद्यपान वास्तव में
मनुष्य को करता नहीं परिवर्तन
उनकी बाधाएँ और समस्याओं को
कभी नहीं मिटा सकते–

कहने योग्य विषयों को
शर्म से न कहने वाला
करने योग्य कोई काम
न कर सकने वाला
मन भर पीने मात्र से
अविरल धारा सा भाषण दे सकता
अनुमान, लज्जा, भय त्याग कर
सत्य वचन सब कह देता
कविता लिख सकने वाला
कलम थाम लिख डालता
गीत गाने वाला
मस्त से गाने लगता
हास्य प्रिय हास्यकार
पेट भर हँसता हँसाता सबको
तात्विक चिन्तन वाला
तत्व क्या है बोल देता–

प्रतिभा अगर उनमें कुछ हो तो
सुस्पष्ट प्रकट कर देता
घातक–हंतक अगर पिये तो
हत्या करने आगे बढ़ता
विरोधियों को गाली देने
गाली देने वालों को मारने
तीव्र सा अटूट प्रयत्न करता

रोमांटिक लक्ष्य – लक्षणों से
रोमियो हो जाता
सारांश क्या है ? कहे तो

शराब मन भर पीने वालों की
प्रतिभा तो दस गुना प्रभावित होती है
प्रवृत्ति तो स्वेच्छा से विहार करती है
उतना ही किन्तु
अवगुण नहीं आते, निहित गुण नहीं जाते
तो क्यों पीना मनुष्य
क्यों पीना ? कैसा पीना ? कब पीना ?
यह तीन प्रश्न
सम्मुख ठहरते हैं–

बिल्ली अगर ताडी पी तो
सिंह समझती अपने को
चूहों को ही नहीं
हाथियों का भी शिकार करने आगे बढ़ती–

विलासी अगर विस्की पी ले तो
अपने घर आये, तो परवाह नहीं
हीरो कहलाएगा अपने घर में
लेकिन पथ भूलकर पर घर गये तो
या इष्ट घर वालों के यहां गये तो
अति प्रमाद होगा–

अगर बन्दर को ब्रान्दि दे तो
गीता पारायण तो नहीं करता
लगा देता आग गलियों को
कोयल को अगर मधु मिल जावे तो
हेमंत ऋतु में भी कूकता
उत्तम गुण वाला अगर

मस्त से मधु पीये तो अच्छा ही
अयोग्य को अगर मधु पिलावे तो
होगा सागर में तैरना जैसा
जिसे नहीं आता तैरना—

मधु–बीर उद्रेक करने का
कायर को नहीं
धीर–वीर को ही रम्मी निभ जाने का
पत्थर को नहीं, रसात्माओं को—

शक्ति बल अगर वश में न हो तो
सहयोग सा उपयोग में होता मधू
प्रेरणा रूपी हवा-सी बहे तो
पंखा जैसा उद्रेक युक्त होती मधू
मधुपान
किसे, कब, और क्यों,
आवश्यक है
वे, तब, और उसलिए
निश्चित कर लेना—

यह मत समझो मैं पीकर ही लिखा
अब मुझे क्यों यह मधु मेरे लिए
लेकिन इसमें सच कोई लोप नहीं दिखता
उसीलिए मुझे पीने का कोई अवसर
हाथ नहीं आया अब तक
पीना हो तो पी लूंगा
शरबत–मधु–कविता रस
रम जाऊँगा साहित्य सुधा में निरंतर
कविता गान रस में मग्न हो—

एकनामिक्स सुन्दरी

वसंत ऋतु को
एक यूनिट सा लिये हुए–
प्रेयसी !
मैं कर रहा
तेरे अधर सुधा कनसंप्पन
ला आफ़ डिमिनिशिंग युटिलिटी को
एक एक्सेप्षन–

प्रणयिनी
तुझे एक कवोष्णगाढ़ परिष्वंग को
मेरा जीवन सर्वस्व अर्पित है
फिर भी
मूझे कन्जुमर्स सरप्लस
इनफिनेट–

राणी !
तेरे सौंदर्य झलक
आँख मिछौनी
मुस्कुराहट
मुझ में मधुर भावनाएँ
प्रोडक्षन को
बढ़िया काम कर रहे हैं

त्रि फय्क्टरर्स आफ़ प्रोडक्शन सा–
कामिनी
तुम्हारे अनुपस्थिति में एक क्षण भी
एकनामिक डिप्रेषन में रहे
देश की रीति
मेरे शरीर के
प्रत्येक अंग स्थंभित हो
मुझे डर बिठा रहा है–

जव्वनी !
मैं तुझसे ब्याक नहीं किए जब
जीरो परचेजिंग पवर में है सो
कन्जुमर सा
इस प्रकृति के
कोई रमणीय दृश्य को
डिमांड नहीं कर सकता–

रमणी
तेरे साथ
प्रतिपक्ष सा रहने के लिए
रंगमंच पर आये हुए
हर बोगस करेन्सी नष्ट हो जाती
ग्रेषम्स सा उल्टा सा
(ऑपरेशन) को आ जाती–
तन्वी
तेरे पदधूली के
मेन्यूर गिरे जब
मेरा थर्डग्रेड हृदय क्षेत्र में भी

इनक्रीजिंग रिटर्न में गिर जाती
सौंदर्य, आनंद पीक–

मनोहारी
इस गीत को
निसीम लम्बी लिख सकता हूँ मैं
परन्तु
तेरे एकनामिक्स में ही कहे जैसा
मार्जिनल युटिलिटी और अधिकतम हो तो
मैनस युटिलिटी
ऊपर गिर जाएगी क्या कहकर
डर रहा हूँ मै, बस ! !

सन्तान शास्त्र

सीमित–सा बढ़ रहा आहारोत्पत्ति
अपरिमित–सा बढ़ रहा संतानोत्पत्ति
उभयोत्पत्ति के निष्पत्ति के अंतर में
उत्पन्न हो जाती महंगाई, अकाल

अनारोग्य के किटाणु
वे बढ़ती जनसंख्या को खाकर
सीमित रखती है जनसंख्या को
तीन ही बातों में कहना हो तो
थामस, माल्थस, जनाभा सिद्धान्त का
है यह सारांश मात्र–

जब को, अब को, कभी को भी
बूटक नहीं सो बात एक है
जितना तेज से जनसंख्या को बढ़ा सकते
उतना तेज जीवन के साधन नहीं बढ़ा सकते

जितना सरलता से प्रश्न पूछ सकते हम
समाधान नहीं दे सकते
उसीलिए साधन संपत्ती हीन संतान
समाधान हीन प्रश्न पात्र ही–

पाँच मात्र को ही सम सके कमरे में
दस लोगों को अगर डाल दे तो
कष्ट सहन करना कोई पाँच मात्र नहीं

वे दस लोग सब
ना आ सकते बाहर
अंदर नहीं रह सकते–

किवाड़ बन्द किए उस कमरे में
पक–पक कर मर जाते ना
रहेंगे वे दस आदमी
कलकत्ता के ब्लाक होल कैदियों-सा–

"निःसीम संतान पालो
जन्मित बच्चों का पोषण छोड़ दो भगवान पर"

कही है सनातनाचार कर्म
पालन–पोषण के लिए ठीक प्रबंध
कितने लोगों को हो सकता देखकर

उससे बढ़कर संतान–निरोध कर लो
कह कर, कह रहा आज का संतान शास्त्र–धर्म–

मनुष्य जन्म लेता
मृत्यु पाने केलिए नहीं
पूर्व जन्म में किए कर्मों को
पूरे दंड भोगने केलिए नहीं
जीवन है आनंदानुभूति केलिए
कष्टों केलिए, आंसुओं केलिए
कारण भूत हो जन्म लेना ही दोष मात्र–

आनंद विवेक श्रम दया दत्त
यातना अविवेक क्रिया कल्पित
अनुराग गीत को
आनंदानुभूति को
सुन्दरता को
सुख केलिए
अभागी का जीवन
वह जीवन जीना नहीं
उसे नहीं समा सकने वाला
अरण्य–संतान पाने
अधिकार हमें नहीं है–

संतान निरोधन करने का मतलब
सौभाग्य को बढ़ाना ही है
कुटुँब नियंत्रण को माने
मानव परिवार को
अमृत बांटना ही है
हर क्षण भर में
तीन लोक जन्म ले रहे हैं
अपने देश में आज

इसका प्रतिफल क्या है कहे तो
रोटी, कपड़ा, मकान नहीं सो
लाखों-करोड़ों लोगों को देखो-

मेहनत करने पर भी न जीने वालों को
भीख मांगने वाले भिखारियों को
आँसू पीकर भूख मिटाने वालों को
जिन्हें जन्म देने वाले कोई भी पापी हो
वैसे संतान न पाने के लिए
मैं यह आवाज दे, पुकार रहा हूँ
अगर यह कविता न होने पर भी
नग्न सत्य तो यह है-

प्रणालिकाओं के बारे में
कुछ भी कहे
प्रचार सा ही लगता है
अच्छाई के बारे में
कैसे भी बोध करने पर भी
धर्म प्रचार जैसा ही लगता है
छुपके से या सीधे से बोलने पर भी
सत्य – सत्य ही होता है
सत्य के लिए
परिवार नियोजन
संतान शास्त्र ही कहलाता-

सूक्ष्मरूपी धर्मों को
सूत्रों जैसा मलकर
शास्त्रों में न दिखने वाले

संतान निरोधक धर्मों को
शास्त्र सा मोड रहा हूँ
सुन्दर-सा बोध करने मात्र से
असत्य-सत्य नहीं कहलाता
संदेह न मिटाने मात्र से
न समझना सत्य को झूठ—

घर—घर को
हर जोड़े को सम्बन्धित
यह संतान शास्त्र प्रबोधित
परिवार नियोजन
यह व्यक्तिगत विषय होने पर भी
आज देश केलिए आदर्श हुई है
सारी समस्याओं के परिष्कार के
सब के आनंदों के अविष्कार के
मूलभूत सिद्धान्त बना है—

"एक चम्मच मात्र बस है,
गंगा गोऊ के दूध
घड़े भर भर के दूध किस काम के"
कहें हैं योगी वेमना अपने धर्म योग से
जी कर नाम कमाये दो ही संतान बस है
न जी सकने, कष्ट उठाने वाले
हजारों की क्या जरूरत
कहे आज संतान शास्त्र
उद्भित निनाद लेकर
"दो या तीन मात्र बच्चे बस"
कह कर दस दिशाओं में घोषित हो रहा—

इहलोक कहे इस रेलगाडी में
चढ़ने वाले हर प्रति–भागी
सुख से प्रयाण करके
देखने योग्य स्थलों को देख कर
तृप्ती से आगे बढ़ना ही
संक्षिप्त रूप में है - हित संतान शास्त्र का–

हमारे कारण वंश एक और जीवी
जन्म न ले तो नहीं कोई कष्ट - नष्ट
जन्मित हर एक को
सुख से अभ्युदयोन्मुख सा
पालन - पोषण न कर सकना
क्षमा - रहित गलती है वह–

"सर्वोजनः सुखिनोभवंतु"
कहलाने वाले आशय को
सविस्तार से
संतान शास्त्र रूप में
मेरा कहना कोई
गलती है क्या ? कहो न तुम ही ?

***

रसज्ञ की विज्ञप्ति

बातें अगर बढ़ - बढ़ कर आवें तो
मति भ्रमण होने का खतरा है
सब में अगर अर्थ निकालते देखे तो
निहित अर्थ अनर्थ होने का प्रमाद है—

रंगमंच पर चढ़े हे कवि ! इस रसज्ञ की
जरा विज्ञप्ति सुन लो
बाद में कुछ भी लिखो और सुनाओ
इसलिए कुछ भूत - दया तो बढ़ालो--

गधे पर गटरियाँ ढोये जैसा
कविता में बातें मत ढोओ
बाल पल्लव कोमल वाक्‌देवी से
उठ-बैठ न कराओ, कुस्तियाँ मत लडाओ—

मृदु सा है कह - भ्रमित हो
गार्धभ गणों के स्वर जैसा
हे स्वामी मत करो काव्य गान
मत निकालो अज्ञान प्राणों को—

भाव रूपी जंजीर तोड कर
भागे बातों के कवित्व रूपी अश्व को
न समाती है ऐसी रसानुभूति
आँखे और शरीर - मंडित
धूलि और धूसर विभूति—

निघंटु पर्वतों पर चढ़कर
मेरे फूल जैसे हृदय की गहराइयों में
गोरिल्ला जैसे शब्द शिलाओं को
गिर - गिराकर मत गिराओ कपिराज कवि

तुम चन्द्र हो या इन्द्र हमें क्या पता
तेरे इन्द्रजाल, महेन्द्र-जाल हमें क्या पता
निघंटुओं और काव्यों को मोलकर
तुम न समझो स्वयं को कवि
करंट को कांति समझकर
स्वयं को रवि मत समझो—

नवरसों के नंदन बृन्दावनों को
मेरे नव नवोन्मेष शुकपिकाओं से
पहुँचाने को आयेंगे - हम समझे तो
पहुँचा रहे हो क्षयरोग के घरों को
शल्य वैद्यशालाओं को—

समास रूपी रस्सियों से
कडवे के झुंड बना कर
कविता की घटरी बाँध कर
सहृदयता सहने वालों के पीठ पर
वजन पर वजन मत ढोओ
चुपके से संप्रदाय - बद्ध न होकर
तीक्षण - तीव्र वज्रघात सा
गाली मत दो, सत्य कहने मात्र से—

विदेश यात्रा

विनोद यात्रा, विज्ञान यात्रा
शांति यात्रा, और समर यात्रा
स्वदेश यात्रा, विदेश यात्रा
तीर्थ यात्रा, रोधसी यात्रा
सब यात्राओं का केन्द्र है
जीवन यात्रा
सब यात्राओं का आदर्श है अनुभूति
यह अनुभूति ही है आयुमात्र जीवन का
अनुभूतियों को बढ़ा लेना
अनुभूतियों को बाँट लेना

समा में देखना असमा
असमा में देखना समा हुआ
आनंदोन्मुख सा बढ़ना
मेरा आदर्श और है आदत
इसी कारण मेरे विदेश यात्रानुभूतियों को
सबसे और मेरे सहृदयों से
बाँट लेने के लिए
इन गीतों को लिखना चाहा–

अरुणोदय से आरंभ कर
संध्यानिशि में समाप्त करना चाहा
आकाश में आरंभ करके
इस धरातल पर समाप्त करना चाहा
एथेन्स में आरंभ करके हमारे
घर में समाप्त करना चाहा–

अरुणोदय

सोक्रटीस, प्लेटो, अरिस्टाटिल
उदित - उज्वल ग्रीक देश के ऊपर से
मध्यधरा समुद्रतट पर जब
विद्या - पीठ हो विलसित
एथेन्स पर से
उडचला हमारा वायुयान
जलद जलज चुम्बनासक्त भ्रमर सा
उदितारुण किरण पुँजों में से
नींद से जाग्रत हो उडे कपोता पोतसा

प्रशांत से युक्त पहाड तलहटि के वहाँ
विश्वंभर तत्क्षण जागृत हो उठे
विशाल सागर विनील तरंगों में
मुखारविंद प्रक्षालन हो पाकर
रम्य सानुव वितर्दिक पर विराजित हो
रागारुण मंदास्मित वदन हो
प्राग्धिशाकाश मुकुर में

स्वविलोकित सा आभासित हुआ
बातों से अप्राप्त सुन्दरता से
उदित हुआ सूर्य बिंब
हृदर रूपी केमरा खोलकर
भासित बटन दबाकर
उन दृश्यों के चित्र खींच लेते ही
उत्तरोन्मुख हो वायुयान उड गया–

✻✻✻

फूलों की बाला हालैण्ड

लोक है क्या, परलोक है क्या, विस्मित हुए मेरे लोचन
गगन मंडल के विमान पंख, धरातल पर बिखर गये

भाव विहंग मन के, अम्बर तक छू गए
हिमपात हो रहा, चमेली की कलियों जैसा
डालियों से झड़ गए, बादलों जैसा, अच्छे रत्नों-सा
गरम हवाओं से मुरझाए गए मुझमें
वसंत कुसुमित हुए जैसा, गायी है अपूर्व संगीत,
प्रसन्न मधुर हिमपात !

हिमपात, हिमपात, कहकर हेमंत संगीत गाकर
जल पर दूध के मक्खन-सा, बगीचे के चाँदनी-सीं रोशनी
राहों में गलियों के बातों को, निखरते हुए खेल लिया
हर्षित हो गा लिया—

हाथ-हाथ मिला कर, मस्त खुशी की विधियों से
विचरित प्रेम-प्रेमिकाओं के जोड़ी पर
वर्षित चमेली के फूलों की वर्षा देख मुझ में
विलसित आनंदोत्साह से, मंजिल तक पहुँच गया हूँ
समाज शास्त्र संस्था को पहुँच गया हूँ ;
बाहर के ठंडक से सिकुडते हुए,

बगल में नहीं सो प्रेमिका को हुआ गान करते हुए
कमरे में उस निशि के अंत तक, किसी प्रकार नींद गया हूँ

स्वप्न से भी सुन्दरतम, सत्य को देखने गया
राजा और रानियों से पालित उस धरातल पर
कविराज हो गया हूँ–

बारों में, कारों में, राहों में, तीर जैसा चुँबित ललनाओं को
देखने हेतु, उनकी सुन्दरता को, निखरने, मेरी नशीली आँखें
कई जगह मुझ को ले गये हैं, बहुत कुछ मुझे घुमाए हैं
न कहे तो वही एक, महान ग्रंथ बन जाएगा–

ऊँचे एडियों के पांव के तलवे पर,काट के खिलौने जैसे
टिक–टिक हो अग्रसर, वहाँ के हँस चाल-सा
उस पाद जघन नग्न सौंदर्य, मिले न मिले आनंद हर्ष
एक ओर आगे बढ़ने का यौवन, दूसरी ओर पीछे ग्रसित आयु
बीच गोपनीय कमरों से, उद्वेलित अंगनों की बाधा

यौवन युक्त प्रत्येक के मन में,
चंचलमय कर देती अनंग बाधा–

छुपके से नहीं जाती वे, तिरछे नजर से देखती हैं
छुपके से नहीं देखती वे, तिरछे नजर से हँसती है
उद्देश्य कुछ भी हो, दूसरों को आकर्षित करती हैं
नवयौवन फण उत्तेजित, नागिनी हो चलती हैं
डसित-सी वनिताएँ, भोगिनियाँ हो ठहरती हैं

लतांगिनियां सुमहासों का, कुसुमास्त्रुनि प्रसव शराओं को
हेमंत न सह कर, आगे बढ़ गयी
हिमपात को डरकर, मिट्टी में छिप गयी

सुमनों से, सुगंधों से, वसंत ऋतु आयी गयी
वन्य कन्यायें न समे कहकर, रंग-विरंगे फूल लायी हैं–

है कि नहीं कि बृन्दावन, होता है संदेह नंदन वन का
लेकिन है कहीं नहीं सो, सुन्दरमय फूल वाला
'कैकेन हाफ' वहां फूलों को बाल्य, यौवन के सिवा
बुढ़ापा है नहीं, सौन्दर्य और आनंद के सिवा
बाधा नहीं है, फूलों को निहित भाग्य उसलिए
फूबोडियां जैसे प्रिय नहीं,

हँसित हो कुसिमित लालायित होती है
कुसुम हंसित हो, संयोग से परवश हो
सुख में लालायित हो, मुदित न स्पर्श से पूर्व
निश्क्रिय होती है, फूलों को देखना हो तो,
हालैंड देखना होगा, हालैंड देखना हो तो,
ऐरोपा देखना होगा--

स्कांडिनेविया

स्कांडिनेविया दर्शित मनुष्य, स्पंदित हुए बिना न रहेगा
वहाँ कविता न लिखने वाला, कहीं भी कवि नहीं बना सकता

कोपन हेगेन, आस्लो, उस पार स्टार होम
उत्तर सागर झीलों में पुष्पित, उत्पन्न फूलों के

शताब्दियों की संस्कृति सुगन्ध, शत पत्रों को
स्वेच्छा स्वातंत्र्यों को दिये, बसंत तरंगों जैसे

हास्य के फूलों से अर्पित, नर नारी के वदन
सौंदर्य, आनंद प्रेरित, अम्बरोन्नत बंगले

हरे भरे समतल भूमि, पीक, परिश्रम घर और विपण गलियाँ
प्रगति की लक्ष्मी के मुकुट पर, सुन्दरतम वज्र मणियाँ--

श्रृंगार अंगार नहीं होता, सोना है वहाँ पर
शीतलता में अंगेठी जैसा, वर्षा में छत्ता सा
ऊष्ण में शीतल अनिल सा,

सेक्स को स्वेच्छा से उपयोग करते हैं
सिनेमा घरों में प्रदर्शित करते हैं,
चित्रशालाओं में अलंकृत करते हैं,
बीच गलियों में बेच लेते हैं, निरोध न हुए जैसा
गर्भ को, गर्भस्त्रवण न हुए जैसा,

कान्ट्रसप्टों को उपयोग करते हैं
स्वीडन में सेक्स विद्या के लिए,
रायल कमीशन को स्थापित किये हैं
प्रकृति इंद्रियों पर से, विकृत निर्बन्धों को बहुत कुछ

निकाल फेंके हैं, स्वेच्छा से होने की बुराई
स्वच्छंद सी होती है, छुपे-चोरी सी करने की,
अच्छाई भी, चांडाल सी भासित होती है–
इन्हेबिषनों को, हिपोक्रिसीयों को
बहुत अच्छे नाम लगाकर, लज्जित होने से भी
करने का कहकर के, हाथ न होने का स्वीकार कर
भलाई, और वही दस हजार समझ कर
आभास हुआ मुझे वहाँ पर–
'नार्रिजयन' पहाड खाइयों में
नवहिम मल्लिकाओं पर, स्काइंग क्रीडा विनोदों में
प्रज्वलित, आनंदोस्नापित जन संदेह में
कैसा वर्णन किया जाए ?
विनील वियत्त में विकसित, अगणित तारों के सौंदर्य को
आशुकविता में कहने को, कैसे साहस कर सकूं
आस्लों में निहित एक मात्र, वीलंड पार्क ही बस है–

जिसमें निहित एक ही नग्न शिल्प कल्पना ही बस है,
चार कालों तक चिरास्थाई बनने नवीन
काव्य लिखने केलिए–

अर्धरात्रि निशा के बीच, घड़ी के दो कांटे
प्रेयसी–प्रियतम सा, एकाकार हो
सौंदर्यार्धरात्रि, कोपन–हगन में
नाले के किनारे पर, निःशब्द निशि अंक में
पवित्र हो बैठी एक सुन्दरी से, किए हुए दो बातें ही
सुनने वाले हो तो, प्रशंसा करने वाले हो तो

तेलुगु कविता के इतिहास में, अपूर्वमय
अनुभूति काव्य को मल सकते हैं
अंबुधी तरंगों में आभासित, अभ्यंगन स्नान करने को
वस्त्र खोल किनारे पर रखते ही, तेज हवा से विचलित हो तो
शर्म से शिलामूर्ति हो जाए, चिन्नारी सा दिख पड़े
वहाँ के समुद्र तट पर, विनील शिला पलक पर

विवस्त्र हो बैठी मर मेड,
पानी में डूब जाना देख कर,
स्वयं रक्षित राजकुमार कौन है ?
स्वयं के आशाओं को पानी कर देना,
सपनों के तपस्या में डूबित
तरुण यौवन रागवती कहीं वह–

सपनों के कहानियों को, मधुर वास्तविकता को
मूर्ति सा कीर्ति पाये सो वह, मुग्ध सौंदर्य–मणि को
सुन्दरता दुदृक्षुता यात्रियों को, देख न पावे, और
वह सिर झुकाए, उस मानस कन्या को
मेरे जीवन में कभी नहीं भूल सकता–

✻✻

लंदन

पहाड़ों–सा, राक्षसी हृदयों–सा
बकासुर के मांसपेशियों सा, ऊँचे सौधों से निहित
लंदन महानगर को मैंने, क्रिसमस के दिन देखा हूँ–

वहाँ की गलियाँ, गलियों के बंगले
बंगलों के अतराफ की दीवारें, सभी स्मरण कराएँ
आँसू युक्त गाथाओं को, भारत माता को निर्बंधित
बहुविध बाधाओं को–

ट्रफरंगल स्कवर में ठहरे, निलसन समय को सीधा देख कर
सिंहावलोकन किया इतिहास को–

वेस्टमिनिस्टर अबें परिसरों में ठहर कर,
थेम्स नदी किनारे से होते हुए, अस्त हो रहा सूर्य समझ कर,
हँस लिया सूर्योदय ही न हो रहा,

मुझे देख कर हँस रही थी थेम्स नदी,
साभिप्राय से बह रही, सागर की ओर अग्रसर हुई–

बकिंगहाम भवन के सम्मुख, पुरानी सुगंध कुछ गोचर हुई,
कुएँ में गिर पड़े सिंह की, असहाय ध्वनि सुन पड़ी।
परान्न भुक्क और कहाँ है दिशा,

अनुचित समस्या, भगवान को स्मरण
आलोकित मेरा हृदय कोई, गाना गा रहा था।

गोटियाँ हुए लकड़ी सा, लकड़ी हुई गोटियों सा
कोई कहावत को कहकर, पोस्टल, टवर के ऊपर से,
स्पष्ट-सा देख लिया हूँ, विशाल सुविशाल प्रशांत नगर को
शौशिर सर्प दष्ट वसंत सौंदर्य को–

ब्रिटिश म्यूजियम, इतिहास को निचोड़े सारांश
बिखर गये पद्मों को, उबरे हुए कासार को
मार्क्स महाशय, महा साम्राज्यों को
चरमगीत लिखे, संध्याचल शिखर है वह–

खंड-खंडांतरों से लाये, अखंड कला खंड है वह
देश-विदेश से आये हुए, शिथिल नागरिकता खंड है
इतिहास महावृक्ष है, विरसित परिणाम गंध है वह
धरित्री से महामह विरचित विज्ञान ग्रंथ
सभी सुरक्षित रखे हुए, आधुनिक सय सभा है वह
दुरहंकार दुर्योधनों को, बुद्धी सिखावे विद्यालय है वह–

ओ हो, अहा कहलाये सोहो शृंगार गतिविधियों में
नैट क्लबों में, काम कलाप
कामिनि के नग्न नृत्य, नाटक तथा भूटक
न देखे हो तो देखना दिल कहता
देखे तो फिर कभी न देखना, कहकर दिल कहता–

केले के छिलके निकाल फेंके वैसा,
प्याज के छिलके निकाले जैसा
शरीर पर के वस्त्र निकाल कर,
रहे जैसा ही भासित स्ट्रीफ-टीज करके
अग्निशिलाओं जैसा नग्न नाट्य करके
चातक पक्षी सा, घन जघन सा,

वीर विलासित आश्चय अभिनय
मनोरंजन के लिए देखना हो तो, ठंडक सा एक रात
लंदन के "सोहों" को देख आना होगा
और ज्यादा कहे तो "हयांबर्ग"
मधुर गलियों को जाकर आना–

"गज है मिथ्या, पलायन है मिथ्या"
मायावाद में लिप्त होकर, "कामनियाँ खेलना है मिथ्या
आखों भर हम देखना सब मिथ्या"
समझकर हम घर आये तो
कोई आपत्ति है ही नहीं
वह सब अच्छा ? या बुरा ? कहने का प्रश्न नहीं उठता–

शेक्सपियर, शेली, कीटस, वर्ड्सवर्थ, गोल्डस्मिथ, बैरन
जानसन, बर्नाडशा जैसे, साहिती स्रवंत बुधवर्ग
तत्वचिंतन सागर सप्त, विलसित इंगलैंड द्वीप के
इतिहास में न मिटने वाला द्वीप है वह–

पेरिस

पेरिस कहने मात्र से हम, पानी-पानी हो जाते हैं
यहाँ तक जो आ पाये हैं, वहां की विचित्र स्थलों को देखेंगे चलो
कहा मेरा मन उस दिन, कह रहा होगा आपका भी मन
वही बात कह रही तुम्हारी आयु भी, पेरिस नगर भर
कला परिमल गुभालित होकर, किस ओर जाने पर भी तुम्हें
कोई-कोई आकर्षित करते हैं–

अम्बर चुंबित हैफन टवर पर से, आश्चर्य से देखते हुए
पुरागाथ कलाप खुलकर खेले, कलापिसा दर्शित होती है
प्यारिस नगर बाला, आँसू के पन्नीर के विलसित
कलुव कुसुम मालाएँ, नेपोलियन के रक्तपिपास बुझाने
कृपाल प्राणी हो तोपों से युक्त हो, सिपाही के झुँड
रणभूमि को विचरित हुवे,
अति विशाल राजमार्ग 'षादि एलिज'
अत्यद्भुत 'अर्क दि त्रयोफ'–

देर कितना भी हो निहार नें मन नहीं भरता
कितना भी करे कवित्व, वह सौंदर्य है वर्णनातीत
जगन्मोहिनी 'मोनालिसा', मूल चित्र शोभित कला चैत्र को
'लूवा' म्यूजियम को वर्णित किए
भावे बल वाला कवि, नहीं मरता कभी भी–

सुन्दर तोता सा, चीनी के गुडिया सा
जहाँ भी जाए अति आनंद सा है प्यारिस नगर
हृदयी लोगों को दैव वर समान–

पिगल विनोद गलियों में, निश्चल गीतमान वालों को
एकांत प्रिय लोगों के मुखमंडल पर
तृप्ती नहीं है–

वेष, भूष, शीष, हाँस बताकर
धोके देने वाली नेरजाण बाँटे आनंद
वास्तयिक नहीं है, फिर भी वह केवल
भ्रम सा गोचर नहीं होता–

ऊँचे पाँव के चप्पल, ऊँचे नितंब
ऊँचे ऊरोज, ऊँचे शिरोज

यह ऊँचे मन मोहक मद में गिरते ही
ऊँचे कसुम शर मन्मथ, तब हमारे मन मन हरते हैं रतियों से
मनुष्य को नहीं, केवल धन को आकर्षित करती है
विलास - विनोद, विपण मार्गों में फिर
मूल्य अतिविचित्र होते हैं, चतुराई से यदि न मोल लेते तो
श्वेत मुख और रिक्त जेब बच जाती
न रुके नाव आगे बढने को, अंगनों के रान देखना होता
हवा बहने की आवश्यकता नहीं,
भाप के इंजन का पुण्य है क्या कह
मिनि स्काट का धर्म है क्या कह
मकर ध्वज के घर एक ओर भासित''
साडी पहने या नहीं का भास होता नहीं
अगर श्रीनाथ ही अब हो तो, काम काज छोड़कर
मिनी स्कार्ट पर, सभी जगह हों पर दिखे उस दृश्यों पर
चित्र - विचित्र इस - छंदों पर गिर के,
बोल सकता था अगाध कविता
वहाँ के कलिक मिठार हृदयों के गींठी को
खोलकर अविष्कार करने वाला था
बाजार के अनंग तत्व को–
भारतांब को वशीभूत करने, वलसघिपत्य को हाथ में लेने
प्रतिशोध के साथ इंग्लैण्ड - फ्रान्स के बीच
इतिहासात्मक वैर - शत्रुता नहीं गये जैसा भासित होता है–
ऐरोपाके द्वि बाजारों में, बेचना नहीं कहता फ्रान्स
इंग्लैण्ड के वस्तुओं को, इंगलीश भाषा को ही
वास्तव में बात करना ही इच्छा नहीं फ्रांस को
फिर भी अमेरिकन भाषा बात करें तो
कोई अभ्यंतर नहीं कहे–

बेल्जियम

सीधा ब्रिजल्स पहुँच गया हूँ
नूतन वर्ष उज्वल गीतिकोत्सवों में सम्मिलित हुआ
अंतरजातीय संस्थाओं को, केन्द्र कार्यालय कहलावे उनमें
दो सौ पचास तक, अपने रीड की हड्डी पर भार लिए
सहस्त्र फण फणीन्द्र, आदिशेष के निकट बन्धु
भासित हुआ ब्रिजल्स, बोंल्जियम में देखने योग्य
वाटर लू है एक मात्र, उस एक मात्र को देखने
उस देश को जाना होगा, एक सुन्दर रत्न को पाने के लिए
अनगिनत गार खोदना होगा–
१८१५ में हुई, भीषण युद्ध क्या कहे तो
कोई बुद्धू भी कह सकता, "वाटर लू" कहकर
वाटर लू कहते ही, जब के राजकीय
सामाजिक परिणाम, साम्राज्य स्थापन हेतु
हुए महा रण रंग, सहज ही स्मरण आते हैं
लंका में तटस्थ राम - रावण युद्ध को
कुरुक्षेत्र में भीषण संग्राम, कौरव - पांडव युद्ध
उनमें से 'वाटर लू' भी एक है
नेपोलियन पराजित होने पर भी
उस भयंकर युद्ध को, यदाचित चित्रित करना
ऊहातीत कुड्य चित्र गोल को, देखने पर भी अविश्वास हुए
सुन्दर कला कौशल को, इस जन्म में न देखे तो भी
एक और जन्म में देख लेना होगा–

हाय ! वह अश्व उस ओर गिर पडा
हाय ! क्यों धरती पर आ गिरा
जिधर भी देखो अधर विकट हास्य
किस लिए उतना द्वेष और क्रोश,
रुधिर पात में, प्रज्वलित धरती
सुकड जाता वह निंगी का चित्र
अस्त्र - शस्त्र, तोप - तबर
कोलाहल - हाला हाल, महोद्धंड भंजन पंडित हो
वेल्लिंगटन नैनों में, पौरुष ज्वालाएँ
विजृंभित योधानु योध के, शत्रु व्यूहों को छेदित वीरों को
वीर विहार, विकट हास्य
कैसा चित्रित किए हो, कितने वर्णों में
कितने आँसुओं की, जलधारा में डुबो गये-

धर्म वेणी जर्मनी

धर्म को एक दिन शूली पर लटकाये, जर्मनी देश को
खंड–खंडांतरों को विजय पाने हेतु, दो भाग हुए देश को
रैन नदी के सजलता को, मानवता के रक्त सिक्त चित्त को
कैसे वर्णन करना नहीं पता,
वैसे कहे तो आप स्तब्ध नहीं बैठेंगे।
जर्मनी नाम लेते ही, दो विश्व संग्रामों के
हिटलर, मुसोलनी, स्मरण आते हैं–सहज ही
जिस प्रकार रावण लंका में, सीता को बंधित किया
उसी प्रकार हिटलर जर्मनी में नीति को बंधित किया
सीता अपना धर्म न छोड़ी, नीति अपना प्राण न त्यागी
मित्रगण खान दंपत्ति से, जर्मनी के कर्मागारों में प्रवेश किये
जब चलोक्ति सा कही यह बातें, शिलाक्षर है वास्तव में–

जर्मनी है श्रम का अन्य नाम,
जर्मनी है परिश्रम का दूसरा नाम
वेद मंत्रों का पठन कर, भारी यंत्र स्थापित कर
योग मार्ग ग्रहण कर, प्रयोग मार्ग डाल कर
आत्म ज्ञान से, पदार्थ ज्ञान को निचोड़ कर
अणु युग को, अन्तरिक्ष युग को
अविष्कार किये, अज्ञात विज्ञान शास्त्रज्ञों की
पवित्रालय है वह धरती, अमृत के पीछे
प्रज्वलित्त विष, जन्मित सागर डोल
हरे लहलहाने वाले खेत, गाढ़ दुग्ध युक्त
अज्ञान ग्राम–ग्रामीण, वैभव पूर्ण नगर

रैन नदी के रागदृगंचों में
पहाड़ों, कुंजों के गारों से भरित हृदयों में
सुसज्जित आश्चर्य जनक देश है वह
निर्मूलन पथ को, विगत को त्याग कर
निर्माण पथों के भविष्य रथों के
चैतन्य नाद से प्रेरित हो, जीवकला विलासिनी
जर्मनी मर्मवेणी है आज—

सुविशाल विपन्न बाजारों भर, विविध वस्तुओं से युक्त
आयात से भी निर्यात को, कई गुना बढ़ाकर
श्रामिक प्रजा को कभी भी, नष्ट नहीं सा गोचर हुआ
देश भक्ति जागृत हुयी जाति को
किसी चीज की कमी नहीं-सा दिख पड़ी
भास, कलोन, बर्लिन, फ्रांक पर्ट, हंबर्ग
पंच महानगर, जर्मनी के चैतन्य भरण
उत्पत्ति को जाति एकता को
उदय किरण तोरण-सा, कलोन चर्च महोन्नत शिखर
सुशोभित समुद्रतट, अनगिनत नगर
हंबर्ग नैट क्लब के बनावटी श्रृंगारों को
रूर के प्रतिभोद्धीप्त कर्मागार
चहुं ओर आश्चर्य तथा विशेषताएँ
विभिन्न राग रंगरेलियाँ, जर्मनी जीवित प्रकरणाएँ
गुत्तियाँ खोलने विवश नहीं—
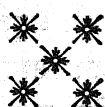
स्वेदमोदयुक्त चकोस्लोवेकिया

जर्मनी के पास है चकोस्लोवेकिया,
मुझे अर्पित आनंदानुभूतियों को
तुम्हें बिना सुनाए नहीं रह सकता,
वर्णन के योग्य कहीं भी हो मैं तो
विना वर्णन किए नहीं रह सकता,
लाने की वस्तुएँ कुछ भी
लाये बिना नहीं रह सकता–

पेट भर खाना हो तो, पुष्कल-सा पीना हो तो
आभरण, अलंकरण हीन, स्वाभाविक सौंदर्य देखना हो तो
मुझ जेसे गरीब को, नरक है चेकोस्लोवेकिया
उसमें भी स्लोवेकिया, है तात्रास लोता त्रास
भासित हुआ, स्वेच्छा स्वतंत्रता से युक्त
साम्यवाद मुझे कुछ, दर्शित हुआ–

लाल कपोत, उससे बढ़कर लाल अधर
चाँदनी शिरोज गण, उससे बढ़कर चाँदनी-सा नयन
तिरछे नजर के नटखटी, वहाँ की नारियों के सहजाभरण
हम जैसे नरम लोगों को, बार-बार डाले प्रियशर
हमारी ओर न देखने पर भी,
उन्हें तो हम कई बार देख लेते हैं
हमें देख कर वे मंदहास न डालनें पर भी
उन्हें हम देख कर मुस्कुराहट फेंकते हैं–

धन को इकट्ठा न करने पर भी धनाड्य हैं वे ।
प्रेम के पिपासी हैं वे परिमल गंध द्रव्य
न उपयोगित, सुरभिलात्माएँ हैं वे–
वर्णनातीत, स्वर्णमीन है वे, पुरुषों के समान ही वे
प्रतिशोध-सा काम करते हैं, कष्ट फल से प्रणय को
हिलमिल कर जीते हैं वे, इसीलिए मुझ जैसे
कवि को आकृष्ट किये हैं–

सहकार कृषक क्षेत्र, दर्शित किए जब
काम्रेड कृषक कुछ, मधुर दावत दिए जब
मगोभर वीर खाकर, मन भर स्लिवोविच
पीकर सुध भूल गये जब मैं, ग्रहित
महानुभूतियों को, बातों को न आये वसंत गीत
प्रकाशान्धकार से निर्मित सोपान
चांदनी रोशनी की ज्योतियाँ, उसीलिए अमृत
सन्निवेशों को तुम्हारे मधुर स्वप्नों केलिए छोड़ रहा हूँ–
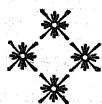
भूलोक सुन्दरी स्विट्जरलैंड

ऐरोप के हृदय स्थल में, खेल खेले रैन नदी
जन्मित अल्फस पहाड़, जलक क्रीड़ाएँ खेले मेटि सरस
सौंदर्य को सुखावे, सुन्दर स्थल है स्विड्जरलैंड
जेनेवा नगर के चारों ओर, जीवकला सौंदर्य को बिछाकर
बिना द्वार को पार किए, अपने घर कोई आवे
मुस्कुराहट से स्वागत किए, थकान को दूर कर आनंद बांटे
विचित्र विनोदिनी है, स्विड्जरलैंड विलासिनी
एक का रहस्य दूसरे को न बतावे,
कही बात को निभाने हेतु
कष्टों में नष्टों में, चोरों को धनिकों को
रक्षित जगदंभा, अवनि-तल का सर्ग रंभा-
मनुष्यों को वह देने की घड़ियाँ,
न भूल सकने के मणिकंकण हैं
भिन्न-भिन्न संस्कृति के होने पर भी
सहजीवन-सौख्य जीवन को बिता सकते कह कर
वह देने का वास्तविक प्रेम संदेश
अंतरजातीयता अजेय शिखर हैं।

क्रीडास्थल रोम नगर

धरातल इतिहास में, पुराणेतिहासों में
भारत देश के समान आवे, वीर भूमि है इटली देश
इतिहास के लिए प्राणाधार, एकता का निश्चल साक्षी
निर्मल मान्ट ब्लाक के पार उतर गत वैभवोपेत रोम में-
भयंकर समर, साम्राज्य, गर्जित कल्लोलित

वेन वेल वसंतों का, जीर्णित संस्कृति कह
मध्यधरा सागर है, रोम महा नगर–

रोम नगर चरित्रास्मृति तो, रोमांचित करती है
हर शिथिल शिल्प सौंदर्य रेखा
कोई महाकाव्य को सुनाती है
काल सर्प उसलिये, कान्सलंटीन आर्च, कलोसियम
काजिल आफ सेंट ऐंजिल, शताब्दियों के चरित्र मंदिर में
गिरे होने पर भी न छेदित स्तंभ, पांथियान, काल
प्रलय गर्जित को भी न डरे, जीव रसानंद निलयम्
निलय वलयं में ग्रसित कलालय, मसोलियं–

मानव सेवा सिक्त भगवद् भक्ति, महानदियां बनकर
अपने उत्तुँगतरंग हाथों को उठाकर
अमर लोकों के किवाड खोल कर
भक्तकोटी को मुक्ति संदेश, देने समान भासित हो रहा
प्रार्थना गीतों से प्रतिध्वनित वहां की ब्रह्मांड मान
सेंट पीटर चर्च के शिखर. भुवन मोहन भवन के सम
एक और नहीं इसके जैसा, क्याथलिक मत पीठं
पोपपाल दिव्य किरीटं, रोम नगर के विशाल शतपत्र को
नाभि सा गोचर हुआ–

रोध-सी यात्री को धरियीसा, रोम नगर यात्री के इतिहास में
काल के मैदान में, निस्वार्थ-सा पडे हुए
रबर गेंद-सा गोचर होती है–
"इटालियन आफ दी ईस्ट" कह कर
इस बीच में ही अपनी तेलुगु भाषा का नामकरण दिये–

वे इसे माने या ना माने, भाषा परंपरा से उनसे हमें
सम्बन्ध तो जोडे हैं, कोई बाहर की सराहना किये बिना

किसी काम के न होते हम, कितना भी महान क्यों न हो
न पहचानते हम अपने आपको
कोई बिंब को प्रतिबिंब, समझना ही हमें है महान
अब तो इटालियनों को तेलुगु भाषा क्या है कहे,
न पता कहने का हम सुन पाते—

❖❖

एथेन्स से ग्राम तक

प्रतिशोध है प्रतिघात युद्ध करके
पुरातन इतिहास पन्नों को, नर रक्त से भिगाए
नगर युगल है रों-एथेन्स
धरातल पर कितने ही संस्कृतियों का आगमन होने पर भी
अज्ञात अगोचर अपरिवर्तित गगन दिशा में
घूम-घूम कर पहुँच गये हैं, एथेन्स नगर को
उस दिन के अरुणोदय के समय
इस गीत को आरंभित कर ग्राम को—
अलेग्जांडर भारत देश को आकर
तेईस शताब्दियां हुईं
बुद्ध, कनफ्युसियश, सोक्रटीस
जन्मित जब तक ही दो शताब्दियां हुईं
होने पर भी मुझे, वहां के अमर शिल्पों को स्पर्शित होने पर
ग्रीक नागरिकता सोपान पर चलते समय, होमर वाल्मिकी
बुद्ध और सोक्रेटिस, अलेग्जांडर-पुरुषोत्तम
अरिस्टाटिल-चाणिक्य, प्रज्वलित, न बुझे दीप बन मुझ में
प्रेरित किए हैं मुझ में न मिटे संचलन—
मानो पिंडार कवि-सा, मैं एथेन्स पर, कविता गंध लेप दिया—

शिल्प कला नैपुण्य, चित्रकला सौभाग्य
वास्तु शिल्प रचना शक्ति, सुन्दर भाव कल्पना सिक्त
बाते गढे पुरातन एथेन्स में, पुलकित हुआ अधुनातन मन में–

एथेन्स परिसरों में मध्यधरा सागर सैकतों में
विनील स्वच्छ जल तरंगों में
सूर्य, चन्द्र प्रकाश हुए उन दिनों में
जल केली विनोद मग्न
जल जगात्र सुन्दरता विकृत नग्न गण
जहां वहां प्रेरित विलासों में समझाए
वैसा वैसा ही चल गया अर्ध रात्री ही
अनिमेषेन्द्र देवेन्द्र बन कर
आनन्द गीत बन कर, प्रात:काल तक
दिल्ली नगर पहुंच गया हूँ
दिल्ली से अतिवेग से जाकर
फिर हमारे ग्राम को पहुंच गया हूं
उस ग्राम में मेरे लिए दस मास
अग्निशिखाओं जैसे कांटों के सज्जे पर
प्यार के चमेली फूलों की मालाओं को
गूंथ रही प्राणेश्वरी के परिश्वंग में
मिल गया हूं मैं अति प्यार से–

इम्मडी नरसिमलू 'विद्यारत्न'

का

संक्षिप्त जीवन परिचय
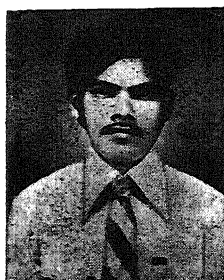
जन्म : 12 दिसम्बर 1952 ई०

जन्म स्थान :

सदाशिवपेट, जिला मेदक (आं. प्र.)

विद्याभ्यास एवं शैक्षणिक योग्यताएँ :–

प्राथमिक शिक्षा सदाशिवपेट, हाई स्कूल जहीराबाद। एम. ए., बी. एड. साहित्यरत्न हिन्दी शिक्षण पारंगत (केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा), राष्ट्र भाषा भारती (हिन्दी) के समुचित प्रचार एवं प्रसार में अभूतपूर्व योगदान पर विश्व भारती विद्यापीठ, उत्तर प्रदेश का शिक्षा पटल आप को "विद्या–रत्न" की सम्मानित उपाधि से समलंकृत किया। भारत की 1981 में हुई जनगणना के दौरान आप के असाधारण उत्साह और उच्चकोटि की सेवाओं के उपलक्ष्य में भारत के राष्ट्रपति ने आप को सहर्ष कांस्य-पदक एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किये हैं।

रचनाएँ :–प्रकृति की गोद में, शुभकामनाएँ, भौगोलिक आन्ध्र प्रदेश, मनुष्य का रूप, आन्ध्र प्रदेश के जनप्रिय कवि श्री. श्री; हिन्दी तथा तेलुगु भाषा की तुलना, स्वर्गीय गोविंद रामदास बाबाजी, आदि।

सम्प्रति :–सरकारी, बालक जूनियर कालेज, संगारेड्डी में हिन्दी अध्यापक।

–प्रकाशक